आशंका से कम ऊपर उठेगा समुद्र तल

ताज़ा अनुमानों के मुताबिक धरती का औसत तापमान बढ़ने के फलस्वरूप वर्ष 2100 तक समुद्र तल में औसत वृद्धि शायद उतनी न हो जितना डर था। संभवतः समुद्र तल में वृद्धि 69 से.मी. के आसपास होगी।

धरती गर्माने के साथ समुद्र तल में वृद्धि के दो प्रमुख कारण हैं। एक तो गर्म होकर पानी के आयतन में वृद्धि होती है। दूसरा, तापमान बढ़ने पर बर्फ ज़्यादा तेज़ी से पिघलती है और ग्लेशियर तथा बर्फ की चट्टानों के पिघलने से जो पानी बनेगा वह अंततः समुद्रों में ही पहुंचेगा। इसके अलावा एक कारण यह भी है कि बर्फ की चट्टानें फिसलकर भी समुद्र में पहुंच सकती हैं। जहां तापमान के कारण पानी के आयतन में वृद्धि की गणना आसान है वहीं यह बता पाना बहुत मुश्किल है कि बर्फ कितनी तेज़ी से पिघलेगा। अब वैज्ञानिकों के एक बड़े दल आइसटुसी (Ice2sea) ने काफी गहन विश्लेषण करके अपने अनुमान प्रस्तुत किए हैं।

दल की गणना दर्शाती है कि बर्फ पिघलने और सरकने के कारण जो पानी समुद्र में पहुंचेगा उसके कारण समुद्र तल में 3.5 से 36.8 से.मी. तक की वृद्धि होगी। यह तब होगा जब कार्बन डाईऑक्साइड का उत्सर्जन तेज़ रफ्तार से बढ़ता रहे।

इसमें यदि गर्मी पाकर पानी के फैलने का आंकड़ा जोड़ दिया जाए तो समुद्र तल में कुल वृद्धि 16 से 69 से.मी. होने का अनुमान है। 2007 में सरकारों की जलवायु परिवर्तन समिति (आईपीसीसी) द्वारा व्यक्त अनुमान लगभग इतना ही था। मगर उस समय कई विशेषज्ञों ने कहा था कि आईपीसीसी ने जो अनुमान लगाया है वह अत्यंत आशावादी है यानी समिति ने समस्या को काफी कम करके बताया है। और तो और, कई स्वतंत्र आकलन प्रस्तुत हुए जिनमें कहा गया था कि समुद्र तल में वृद्धि 1-2 मीटर तक हो सकती है।

ताज़ा रिपोर्ट तैयार करने के लिए वैज्ञानिकों ने काफी नफीस मॉडल्स का उपयोग किया है। आइसटुसी के समन्वयक डेविड वागन का कहना है कि वे काफी विश्वास से कह सकते हैं कि उनका आंकड़ा यथार्थ के काफी करीब है क्योंकि इसमें उन्होंने सारे कारकों का ख्याल रखा है।

वागन का यह भी कहना है कि हालांकि समुद्र तल में वृद्धि उतनी अधिक नहीं होगी जितनी आशंका थी, मगर इतनी वृद्धि भी चिंता का विषय है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया है कि यह वृद्धि इतने पर रुकेगी नहीं क्योंकि धरती का गर्माना एक निरंतर प्रक्रिया है और इसके परिणाम जुड़ते जाएंगे। ***(स्रोत फीचर्स)***